हिन्दी साप्ताहिक

REGI No:- UABIL/25/A3383

उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -02 ♦ अंक-30 ♦देहरादून - रविवार 24 मई 2026 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्यः 1/-15

स्वास्थ्य मंत्रालय का बड़ा फैसला :प्रेगाबालिन दवा अब शेड्यूल एच१ में शामिल, दुरुपयोग पर सख्ती

नई दिल्ली। स्वास्थ्य मंत्रालय ने शुक्रवार को कहा कि उसने ड्रग्स नियम, 1945 की अनुसूची एच1 के तहत प्रेगाबालिन दवा को शामिल करने संबंधी अधि सूचना जारी कर दी है। यह फैसला कुछ राज्यों से मिली उन रिपोर्टों को देखते हुए लिया गया है, जिनमें प्रेगाबा. लिन के गलत इस्तेमाल और दुरुपयोग की बात सामने आई थी। नियमों का उल्लंघन करने और उनका पालन नहीं करने पर ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट, 1940 और उसके तहत बनाए गए नियमों के अनुसार दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। मंत्रालय ने बताया कि यह दवा पुराने दर्द, न्यूरोपैथी, फाइब्रोमायल्जिया और कुछ विशेष न्यूरोलॉजिकल स्थितियों के इलाज के लिए दी जाती है, लेकिन कथित तौर पर इसके नींद लाने वाले, उत्साह पैदा करने वाले और मानसिक प्रभावों के कारण इसका गलत इस्तेमाल किया जा रहा है। मंत्रालय ने कहा कि सभी संबंधित पक्षों, जिनमें निर्माता, वितरक, थोक विक्रेता, खुदरा विक्रेता और फार्मासिस्ट शामिल हैं, को सलाह दी जाती है कि वे इस अधिसूचना के प्रावधानों का सख्ती से पालन सुनिश्चित करें।देश के कुछ हिस्सों से अवैध रूप से जमा की गई और बिना अनुमति के बेची जा रही प्रेगाबालिन की हाल में बरामदगी की खबरें भी सामने आई हैं। गैजेट ऑफ इंडिया एक्स्ट्राऑर्डिनरी में प्रकाशित इस अधिसूचना के बाद प्रेगाबा. लिन अब ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स रूल्स, 1945 के तहत मौजूदा शेड्यूल एच के बजाय अधिक सख्त शेड्यूल एच1 प्रावधानों के तहत विनियमित की जाएगी। शेड्यूल एच1 के तहत दवा के पर्चे पर लिखी चेतावनी दवा - सावधानी में कहा गया है कि इस दवा को डॉक्टर की सलाह के बिना लेना खतरनाक है और इसे किसी पंजीकृत चिकित्सा प्रैक्टिशनर (आरएमपी) के पर्चे के बिना खुदरा में नहीं बेचा जा सकता। संशोधित वर्गीकरण के अनुसार, प्रेगाबा. लिन केवल किसी पंजीकृत चिकित्सा प्रैक्टिशनर (आरएमपी) द्वारा जारी वैध पर्चे के आधार पर ही बेची जा सकेगी। साथ ही, खुदरा विक्रेताओं को पर्चों और बिक्री का विवरण दर्ज करने के लिए अलग रजिस्टर रखना होगा और निर्माताओं को उत्पाद की पैकेजिंग पर निर्धारित शेड्यूल एच1 ड्रग वार्निंग लेबल प्रमुखता से प्रदर्शित करना होगा। मंत्रालय ने कहा, इस कदम का उद्देश्य पूरी आपूर्ति शृंखला में जवाबदेही को मजबूत करना, बिना अनुमति के पहुंच को रोकना, पर्चों की निगरानी को बेहतर बनाना, अवैध तस्करी पर रोक लगाना और दवाओं के गलत इस्तेमाल व दुरुपयोग से जनस्वास्थ्य की रक्षा करना है।

बीमार पिता को स्ट्रेचर पर छोड़ बेटा हुआ गायब

देहरादून। राजकीय दून मेडिकल का. लेज अस्पताल में शुक्रवार को रिश्तों को शर्मसार करने वाला एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया। यहां एक बेटा अपने बीमार बुजुर्ग पिता को अस्पताल के स्ट्रेचर पर ही लावारिस छोड़कर चला गया। गढ़ी कैंट निवासी सुरेश को उनका बेटा शुक्रवार सुबह इलाज के लिए दून अस्पताल लेकर पहुंचा था। डॉक्टरों ने एक्स-रे और अन्य जरूरी जांच के बाद उनकी हालत को देखते हुए अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी। पिता को भर्ती करने की बात सुनते ही बेटा उन्हें वहीं स्ट्रेचर पर छोड़कर चुपचाप वहां से खिसक गया।बेबस पिता करीब तीन घंटे तक उसी स्ट्रेचर पर लेटे बेटे की राह ताकते रहे। काफी देर बाद अस्पताल के सुरक्षाकर्मियों की नजर उन पर पड़ी। उन्होंने पूछ. ताछ कर परिजनों को फोन मिलाया, तब जाकर बेटे की इस करतूत का पता चला। सुरेश ने बताया कि उनकी पत्नी उर्मिला एक स्कूल में सुरक्षाकर्मी हैं। बाद में स्कूल की छुट्टी होने पर पत्नी अस्पताल पहुंचीं और अपने पति को वापस घर ले गईं।

मुख्यमंत्री ने वनाग्नि नियंत्रण, पेयजल, स्वास्थ्य एवं मानसून तैयारियों की समीक्षा की

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मुख्यमंत्री आवास में आयोजित उच्चस्त. रीय बैठक में वनाग्नि नियंत्रण, पेयजल व्यवस्था, स्वास्थ्य सेवाओं एवं मानसून तैयारियों की विस्तृत समीक्षा करते हुए अधिकारियों को समयबद्ध और प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि वन संपदाओं को नुकसान पहुंचाने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाए तथा वनाग्नि की घटनाओं पर नियंत्रण के लिए रिस्पॉन्स टाइम न्यूनतम रखा जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि वनाग्नि की सूचना मिलने के एक घंटे के भीतर संबंधित अधिकारी मौके पर पहुंचें।

वनाग्नि नियंत्रण के लिए शीतलखेत मॉडल अपनाने के निर्देश: मुख्यमंत्री ने वनाग्नि पर प्रभावी नियंत्रण के लिए शीतलखेत मॉडल को प्रदेशभर में लागू करने पर जोर दिया। उन्होंने फायर लाइन के आसपास छोटी-छोटी तलैया बनाने, वनाग्नि रोक. थाम के लिए ठोस एक्शन प्लान तैयार करने तथा आग बुझाने वाले कार्मिकों को पर्याप्त उपकरण उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि वनाग्नि की घटनाओं को रोकने के लिए व्यापक स्तर पर जन-जागरूकता अभियान चलाया जाए। मुख्यमंत्री ने फॉरेस्ट गार्ड की पर्याप्त उपलब्ध ता सुनिश्चित करने के लिए एक हजार नई नियुक्तियां करने के निर्देश दिए। साथ ही ग्राम समितियों एवं वन पंचायतों को वनाग्नि रोकथाम के लिए नियमानुसार आवश्यक बजट उपलब्ध कराने को कहा। मुख्यमंत्री ने मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं को देखते हुए वन विभाग के प्रत्येक डिवीजन में पशु चिकित्सकों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने मोबाइल अलर्ट प्रणाली के माध्यम से संबंधित क्षेत्रों में वनाग्नि की सूचना तत्काल उपलब्ध कराने पर बल दिया।पेयजल और विद्युत व्यवस्था सुचारू रखने पर जोर; ग्रीष्मकाल को देखते हुए मुख्यमंत्री ने प्रदेश में पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पेयजल टैंकरों की पूरी उपलब्धता बनी रहे तथा क्षतिग्रस्त पेयजल लाइनों को शीघ्र सुचारू किया जाए। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आमजन को पेयजल के लिए किसी प्रकार की परेशानी न हो। उन्होंने मैदानी क्षेत्रों के साथ-साथ तीर्थाटन एवं पर्यटन स्थलों पर भी पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में विद्युत आपूर्ति निर्बाध बनी रहे और ऊर्जा उत्पादन बढ़ाने के लिए और अधिक प्रभावी प्रयास किए जाएं।

मानसून तैयारियों की समीक्षा, प्रभारी सचिव करेंगे स्थलीय निरीक्षण: मुख्यमंत्री ने मानसून सीजन को ध्यान में रखते हुए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समय से सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनपदों के प्रभारी सचिव अपने-अपने जिलों का स्थलीय निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लें तथा संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष सतर्कता बरती जाए।

अस्पतालों में फायर सेफ्टी ऑडिट और साफ-सफाई पर विशेष ध्यान: स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने सभी अस्पतालों का फायर सेफ्टी ऑडिट अनिवार्य रूप से कराने के निर्देश दिए। उन्होंने अस्पतालों में साफ-सफाई की बेहतर व्यवस्था बनाए रखने पर विशेष जोर दिया। मुख्यमंत्री ने संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने के निर्देश देते हुए कहा कि सभी गर्भवती महिलाओं का पूरा डाटा सुरक्षित रखा जाए तथा मानसून काल में उन्हें अस्पतालों तक पहुंचाने की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

चारधाम यात्रा में श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता; मुख्यमंत्री ने कहा कि चारधाम यात्रा पर जाने वाले जिन श्रद्धालुओं को स्क्रीनिंग टेस्ट में स्वास्थ्य की दृष्टि से फिट नहीं पाया जा रहा है, उन्हें यात्रा न करने के लिए प्रेरित किया जाए। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं की सुरक्षित एवं सकुशल यात्रा कराना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथ. मिकता है।

कैंसर पीड़िता की 50 हजार की मदद, दोनों बच्चों की पढ़ाई का जिम्मा उठाया

देहरादून। जिला प्रशासन ने डोईवाला की रहने वाली कैंसर पीड़िता की आर्थिक मदद की है। प्रशासन ने उन्हें बड़ी आर्थिक और शैक्षिक राहत पहुंचाई है। पीड़िता सुनीता ने जिलाधिकारी सविन बंसल से मिलकर अपनी व्यथा साझा की थी। उन्होंने बताया कि पति के निधन के बाद वे अकेले ही कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से लड़ रही हैं। आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय हो चुकी है कि एक तरफ जहां उनका इलाज रुकने की कगार पर है, वहीं पैसों के अभाव में बच्चों की पढ़ाई भी छूट रही है। उन्होंने डीएम से बच्चों की फीस माफी और आर्थिक मदद की मांग की थी। जिलाधिकारी ने तत्काल कड़े निर्देश जारी किए, जिसके बाद प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई की। प्रशासन ने महिला के इलाज और तात्कालिक खर्चों के लिए रायफल क्लब फंड से ६50,000 की नकद सहायता स्वीकृत कर उपलब्ध कराई गई। डीएम सविन बंसल ने बताया कि सुनीता के बेटे का विद्यालय में दाखिला सुनिश्चित कराया है। फीस न भर पाने के कारण घर बैठी बेटी की शिक्षा को जिला प्रशासन की महत्वाकांक्षी पहल 'प्रोजेक्ट नंदा-सुनंदा' के तहत दोबारा शुरू करवाया गया है।

सम्पादकीय

उमड़ता आस्था का जनसैलाब

गंगोत्री,यमुनोत्री च,बद्रीकेदारनाथयः।
चतुर्धामं समायाति, पुण्यभूमौ दिवं यथा।।
धर्मयात्रा शुभं यातु, भक्तजनहिताय च।
देवभूमौ सदा तिष्ठेत, हरिहराणां कृपारसा।।

अर्थात

गंगोत्री,यमुनोत्री,बद्रीनाथ और केदारनाथख्ये चार धाम मिलकर पुण्यभूमि में दिव्य-स्थान बनाते हैं। इस पवित्र यात्रा का आयोजन शुभ हो ,मंगलमय हो, जिससे भक्तों को कल्याण प्राप्त हो और देवभूमि पर सदा हरि-हर (विष्णु-शिव) की कृपा बनी रहे।

इस वर्ष शुरू हुई चारधाम यात्रा में भारी संख्या में श्रद्धालु उमड़ रहे हैं और केवल 35दिनों में लगभग 20.76 लाख भक्तों ने चारों धामों (यमुनोत्री, गंगोत्री,केदारनाथ और बद्रीनाथ) के दर्शन कर एक नया रिकॉर्ड बना दिया है। कभी कभी होने वाले विपरीत मौसम के बावजूद श्रद्धालुओं का उत्साह बढ़ता जा रहा है घ।

बता दें कि चारधाम यात्रा मार्ग के हर प्रमुख पड़ाव पर पेयजल, स्वास्थ्य सेवाएं, आवास, स्वच्छता और यातायात प्रबंधन की व्यवस्थाएं की गई है।इसके अलावा दुर्गम पहाड़ी भूगोल और लगातार बदलते मौसम को देखते हुए संवेदनशील व भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखी जा रही है।

किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए एसडीआरआफ, डीडीआरएफ और एनडीआरएफ की टीमें हाई अलर्ट पर हैं और त्वरित राहत एवं बचाव कार्यों के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

यूं ही सुखद मनोरम वातावरण में यात्रा चलती रहे।हर तरफ शांति एवं सौहार्द का वातावरण हो।राज्य में सुख समृद्धि बनी रहे।आध्यात्मिक यात्रा यूं ही चलती रहे, जन-मन में सुख शांति बनी रहे, यही ईश्वर से कामना है।

जय देवभूमि उत्तराखंड!!जय भारत!!

डॉ.गार्गी मिश्रा

अस्तित्व के संघर्ष के साथ बढ़ता शरणार्थी संकट

नवनीत शर्मा

'अपनी माटी' की संकल्पना शायद घुमंतु जीवन के अवसान के साथ ही शुरू हुई होगी। इसी संकल्पना के विस्तारण ने अपनी गली, मोहल्ला, गांव, देस-परदेस की अवधारणाओं को जन्म दिया। बसने के लिए एक खोह या कंदरा भी घर के नाम से सुशोभित होती है और कोई घर अपने निवासियों को नहीं निकालता और यदि निकालता है तो उसे सीमांत पर ले जाकर पलायन करने को मजबूर करता है। पलायन का शब्द और संगीत दोनों ही वीभत्स भाव पैदा करते हैं। पलायन के साथ ही व्यक्ति न केवल बेघर हो निरा. श्रित हो जाता है, साथ ही वैयक्तिक नागरिकता खो शरणार्थी के सर्वनाम में तब्दील हो जाता है। शरणागत की रक्षा करने वालों की प्रशंसा में अनेकों वीरगाथाएं हैं पर शरणागत होना हमेशा ही एक अभिशाप रहा है। अपना और अपनों की जीवन रक्षा के लिए किया गया पलायन हमेशा रणछोड़ बनाता है, कमजोर नहीं। दुनिया भर में अस्मिता और अस्तित्व की लड़ाई हमेशा ताकत और वर्चस्व से तय हुई, जिसमें अल्पसंख्यक और हाशिये के लोग या तो हताहत हुए अथवा पलायन करने को मजबूर हुए। इस समय दुनिया भर में लगभग बारह करोड़ 'वैध' शरणार्थी हैं। इनमें अवैध शरणार्थियों की संख्या नहीं जोड़ी जा सकती क्योंकि उन्हें कोई नहीं गिनता, न पलायन को मजबूर करने वाला देश, न ही शरण देने वाला देश। ये शरणार्थी तो वे हैं जो राजनीतिक, धार्मिक, भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, भाषायी, नस्लीय, जातीय, रंग, यौनिकता इत्यादि चिह्नित भेदों की वजह से पलायन करते हैं। अपने ही देश में 'परदेसी' होने की व्यथा हम ने कोरोना काल में सड़कों पर पैदल चलते देखी है। जीवन, सुरक्षा और बेहतर कल की आस लिए सैकड़ों लोग अपने घरों से भागते हैं। इस संख्या का एक तिहाई हिस्सा उस पीढ़ी का है जो अभी 18 बरस की भी नहीं हुई। ये वे नाबालिग हैं जिन पर वैध वयस्क नागरिक होने से पहले ही शरणार्थी होने का ठप्पा लग जाता है। इस आबादी में बहुत-से अबोध तो देश और भूगोल के बीच अंतर भी नहीं कर पाते। 12 करोड़ विस्थापितों में लगभग 68 प्रतिशत अपने ही देश में इस दंश से पीडिघ्त हैं तो लगभग चार करोड़ राष्ट्र के स्तर पर शरणार्थी हैं। 60 लाख की जनसंख्या राजनीतिक शरणार्थी के दर्जे के लिए कतार में है और 50 लाख लोग अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा की गुहार लगा रहे हैं।

जिस दुनिया में पूरी आबादी की तुलना में दोगुनी बंदूक की गोलियों का निर्माण और खपत हो, वहां कौन कब तक परलोक से यहां शरणार्थी है, कहा नहीं जा सकता। इन शरणार्थी-विस्थापित लोगों को घुसपैठिया करार देकर एक अलग तरह की राजनीति भी जन्म लेती है जिससे एक अलग तरह का उग्र राष्ट्रवाद पनपता है। लडना हमेशा पर्याय रहा है भागने का, भागना विपर्यय है और मानवजीवन की मानवरचित विद्रूपता भी। नदी की बाढ़ की चपेट से भागे हुए व्यक्ति और युद्ध की चपेट से भागे हुए व्यक्ति में एक बड़ा अंतर होता है। बाढ़ का उन्माद उतर सकता है, युद्ध और विभेदीकरण का उन्माद केवल स्वरूप बदल सकता है, मिटता नहीं है। पलायन को मजबूर व्यक्ति की खलनायक के प्रति हिंसा और नफरत पनपती है और हिंसा प्रतिहिंसा को जन्म देती है। यह खलनायक प्रायः भिन्न देश, धर्म, रंग, नस्ल, जाति, भाषा के होते हैं और पलायनकर्ता केवल उस खलनायक से ही नहीं अपितु उसकी पूरी सभ्यता और संस्कृति के खिलाफ लडने का भाव रखता है। पलायन से अभिशप्त व्यक्ति अपनी वैयक्तिक नागरिकता की खोज में हर सामूहिक अस्मिता या पहचान का परस्पर विरोध करता है।

शरणार्थी व्यक्ति अवसाद, कुंठा, प्रतिकार इत्यादि मनोभाव लेकर नई जमीन की तलाश में होता है। धान और आदमी में शायद यही अंतर है। धान का बेहन लगता है जबकि अपनी जड़-जमीन से उखाड़ा हुआ व्यक्ति कहीं और नहीं पनप पाता, क्योंकि उसके सपनों का भूगोल उसे वह जलवायु नहीं देता जहां से वह पलायन करके निकला था। शरणार्थी बच्चों के सपने में उसके वर्तमान और उसके मां-बाप के अतीत के देश-जलवायु में फर्क होता है जो उसे कहीं का स्पष्ट सपना नहीं देखने देता। कुछ देश शरणार्थी अथवा पलायनकर्ता को न चाहते हुए भी उनको पहले की तरह बसने में सहायता करते हैं और कुछ देश उन्हें घुसपैठिया कह कर भगाने के बारे में विचार करते हैं। कुछ देशों के विराटमना होने से मामला नहीं सुलटेगा। सभ्यताओं के टकराव के सभ्यतापूर्वक हल की गुंजाइश ही इस संतप्तता से बचा सकती है। संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाएं 'मुहाजिरों' को रिहायश तो मुहैया करा सकती हैं, पर वतन की सरजमीं नहीं।

केवल कानून से नहीं बंद होगी धांधली

विराग गुप्ता

अनेक अपराधी जेल से लोकसभा का चुनाव जीते हैं। उन्हें जीत का सर्टिफिकेट न मिले और वे शपथ ग्रहण नहीं करें, तो क्या उन्हें सांसद की मान्यता और वेतन आदि मिलेगा? इसका जवाब नहीं है। परीक्षाओं में धांधली रोकने के लिए केंद्र सरकार ने जिस कानून को आधी रात को लागू किया है, उसे इसी तरीके से समझने की जरूरत है। इसे चार माह पहले ही संसद के साथ राष्ट्रपति की स्वीकृति मिल गयी थी। नीट और अन्य कुछ परीक्षाओं में धांधली के हो रहे खुलासे और अनेक परीक्षाओं के रद्द होने से जब पानी नाक के ऊपर आ गया, तो सरकार ने नये कानून के ब्रह्मास्त्र का इस्तेमाल किया है।

मजेदार बात यह है कि इसकी धारा 17 के तहत कानून मंत्रालय ने अभी विस्तृत नियम नहीं बनाया है। उनके बगैर यह कानून बिना बारूद दिखावटी तोप जैसा है। इसे एक और तरीके से समझते हैं। डेटा सुरक्षा का कानून पारित होने के बावजूद नियम न बनने की वजह से ठंडे बस्ते में पड़ा है। नये कानून के साथ नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) में सुधार के लिए एक उच्च स्तरीय समिति गठित की गयी है, जिसे दो माह में रिपोर्ट देनी है। जिन्होंने श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी' पढ़ा है, उन्हें पता है कि भारत में मामले को टालने के लिए समिति बनाना परंपरागत और कारगर हथियार है।

कानूनों में पहले ही नकल, भ्रष्टाचार, फर्जीवाड़ा और संगठित अपराध रोकने के लिए प्रावधान हैं, जिनके तहत अभी पुलिस मामले दर्ज कर रही है। नये कानून के तहत परीक्षा आयोजित करने वाली एजेंसी या सर्विस प्रोवाइडर पर एक करोड़ रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। सर्विस प्रोवाइडर संगठित अपराध करे, तो न्यूनतम पांच और अधिकतम दस साल की जेल हो सकती है। परीक्षा केंद्र में गड़बड़ी करने पर चार साल के लिए केंद्र को निलंबित किया जा सकता है। संबंधित अधिकारियों को लोक सेवक का दर्जा मिलने की वजह से उनके खिलाफ आपराधिक साजिश के साथ भ्रष्टाचार का मामला भी चल सकता है। बंबई हाइकोर्ट के नये फैसले के अनुसार, 2015 के कानून से काले धन के पुराने मामलों में कार्रवाई करना संविधान के अनुच्छेद 20 का उल्लंघन है। इसलिए नये कानून से पुराने अपराधों की जांच कैसे होगी, इस बारे में भी कानूनी विवाद की स्थिति है। इस कानून के दायरे में यूपीएससी, एसएससी, रेलवे, बैंकिंग और एनटीए द्वारा आयोजित परीक्षाएं आयेंगी। इसलिए लोक सेवा आयोग और बोर्ड आदि की नौकरियों और परीक्षाओं में धांधली को रोकने के लिए राज्यों को नये मॉडल कानून के अनुसार नये सिरे से कानून बनाने होंगे। कई राज्यों में ऐसे कानून पहले से हैं। उड़ीसा में 1988, आंध्र प्रदेश में 1997, उत्तर प्रदेश में 1998, झारखंड में 2001, छत्तीसगढ़ में 2008, राजस्थान में 2022, गुजरात और उत्तराखंड में 2023 में नकल और धांधली रोकने के लिए कानून बनाये गये हैं। उत्तर प्रदेश में नकल रोकने के लिए एसटीएफ ने कमान संभाल ली है। परीक्षा केंद्रों में सीसीटीवी, कैमरा, वॉइस रिकॉर्डर, राउटर, वेब टेलीकास्ट आदि को दुरुस्त रखना होगा। नयी नीति के अनुसार निजी कंपनियों और परीक्षा केंद्रों के लिए एसटीएफ की मंजूरी जैसे सख्त प्रावधान हैं। इसमें नकल और एग्जाम माफिया गड्डमड्ड कर परीक्षार्थियों पर नियमों का बोझ डालने से चीजें बिगड़ सकती हैं। सुप्रीम कोर्ट में इस मामले में आठ जुलाई को सुनवाई होगी, पर पिछली बार जजों ने साफ कर दिया था कि परीक्षाओं में 0।001 फीसदी गड़बड़ी भी बर्दाश्त नहीं होगी। अगर भ्रष्ट तरीके से परीक्षा पास किये लोग डॉक्टरी के पेशे में आ गये, तो फिर समाज की कितनी दुर्दशा होगी।

शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान अब किस्तों में गलतियों और गड़बड़ी को स्वीकार कर रहे हैं। साल 2004 में 13 और 2015 में 44 परीक्षार्थियों को पर्चा लीक होने पर एआईपीएमटी ने परीक्षा को रद्द कर दिया था। लेकिन नीट में बड़ी धांधली के सबूत आने के बावजूद परीक्षा रद्द करने से सरकार इंकार कर रही है।

बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने राजद नेता तेजस्वी यादव को कटघरे में खड़ा करते हुए पेपर लीक को तो मान ही लिया है। डार्क नेट में पर्चा मिलने पर सरकार ने नेट की परीक्षा रद्द कर दी। अब नेट की धांधली के तार नीट से भी जुड़े मिल रहे हैं, तो नीट परीक्षा को रद्द कर नयी परीक्षा कराने की मांग हो रही है। नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण के साथ एनटीए जैसे आधुनिक संस्थानों पर युवाओं का भरोसा बरकरार रखने पर ही विकसित भारत का निर्माण हो सकेगा। नीट की पूरी परीक्षा रद्द करने की बजाय स्थानीय स्तर पर दोषियों को चिह्नित और दंडित करने के लिए इन चार उपायों पर अमल करने की जरूरत है। पहले आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के इस्तेमाल से सभी संदिग्ध छात्रों, अभिभावकों, कोचिंग संस्थानों, परीक्षा केंद्रों, नकल माफिया और एनटीए अधिकारियों की पहचान एक दिन में पूरी हो। अगले दिन सीबीआई और ईडी उनके बैंक खातों की जांच और उनका नार्को टेस्ट कराये। जैसे छोटे-छोटे मामलों में मीडिया ट्रायल होता है, वैसे ही नीट मामले में पारदर्शिता के साथ कारवाई का सीधा प्रसारण और रिपोर्टिंग हो। तीसरे चरण में दागी लोगों की संपत्ति की कुर्की हो। नये कानून के प्रावधानों के अनुसार छात्रों को हुए आर्थिक नुकसान की भरपाई नकल माफिया और लापरवाह अधिकारियों के खातों और संपत्ति से होनी चाहिए।

नीट मामले में यह बयान कि मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित होने की वजह से सरकार अदालत के आदेश का पालन करेगी, हास्यास्पद और शर्मनाक है। इस फॉर्मूले के अनुसार तो अदालत में लंबित सभी मामलों से सरकार को पल्ला झाड़ लेना चाहिए। जिन अपराधियों का संगठित तंत्र होता है और उन्हें नेताओं का प्रश्रय मिलता है, उनके सामने कानून के लंबे हाथ बहुत छोटे पड़ जाते हैं। कानून कितनी तेजी से काम कर सकता है, इसकी एक मिसाल आंध्र प्रदेश के मामले में देखी जा सकती है। पूर्व मुख्यमंत्री जगन रेड्डी की पार्टी वाईएसआर कांग्रेस के ऑफिस को भोर में चंद्रबाबू नायडू सरकार ने बुलडोजर से ढाह दिया।

गर्म पेय से जीभ जल गयी है तो तुरंत करें ये उपाय

मिलेगा आराम

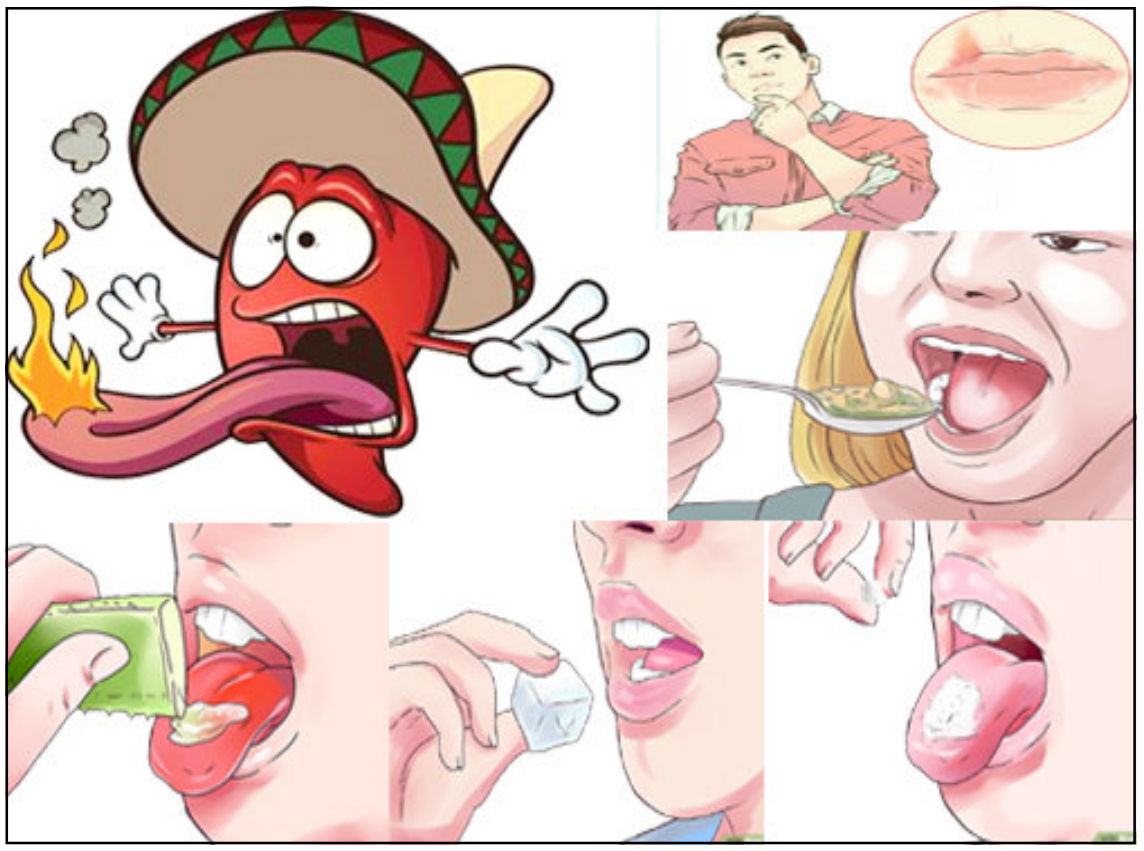

चाय या कॉफी की चुस्कियों का वास्तविक स्वाद तभी आता है, जब उसे गरमा-गरम पिया जाए। लेकिन कभी-कभी जब आप जल्दी में कोई गरम चीज पी लेते हैं तो आपकी जीभ जल जाती है, जिससे आपको काफी जलन का अहसास होता है। अगर आपने भी कभी इस स्थिति का सामना किया है तो आप कुछ बेहद आसान उपायों की मदद से अपनी जली हुई जीभ को आराम दे सकते हैं। तो चलिए जानते हैं इन उपायों के बारे में-

सांस लें मुंह से

जीभ के जलने पर आप यह तरीका भी अपना सकते हैं। जैसे ही आप कुछ गर्म खाएं या पीएं और आपकी जीभ जल जाए तो आप तुरंत उसे थूक कर अपनी जीभ को बाहर निकालें और मुंह से सांस लें। ऐसा करने से ठंडी हवा आपकी जीभ पर लगेगी और आपको ठंडक का अहसास होगा। यह दर्द व जलन को शांत करने का एक बेहद आसान और कारगर तरीका है।

ठंडा पानी

अगर आपको अपनी जीभ पर हल्की जलन का अहसास हो रहा है तो इससे छुटकारा पाने का एक सबसे आसान उपाय है कि आप तुरंत एक गिलास ठंडा पानी पीएं। इससे आपको जीभ में होने वाली जलन से आराम मिलेगा। वैसे आप चाहें तो ठंडे पानी के स्थान पर कुछ भी ठंडा जैसे बर्फ, आईसक्रीम या ठंडा जूस आदि का सेवन भी कर सकते हैं। यह ठंडी चीजें आपको सूदिंग इफेक्ट देती हैं। इसके अतिरिक्त आप कुछ दिनों तक गर्म खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों से दूर रहें।

नमक के पानी का इस्तेमाल

ठंडा पानी पीने के बाद जब आपकी जीभ का तापमान सामान्य हो जाए तो आप हल्के गुनगुने पानी में एक चम्मच नमक डालकर उससे कुल्ला करें। इससे भी आपको बाद में होने वाली जीभ में जलन से आराम मिलेगा। दरअसल, नमक एक प्राकृतिक एंटीसेप्टिक है जो सूजन और दर्द को कम करता है। इससे आपको जलन का अहसास काफी कम होगा।

चीनी है कारगर

चीनी को एक प्राकृतिक पेन रिलीवर के रूप में जाना जाता है। जीभ के जलने पर आप कुछ दाने चीनी के अपनी जीभ पर रखें और अपने आप घुलने दें। इससे आपको जलन में काफी राहत मिलेगी। आप चाहें तो चीनी के स्थान पर दही का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। शहद में मौजूद एंटीबैक्टीरियल गुण जलन को शांत करने के साथ-साथ हीलिंग प्रोसेस को भी तेज करते हैं।

ऐलोवेरा आएगा काम

ऐलोवेरा का इस्तेमाल आपने यूं तो कई तरह से किया होगा, लेकिन यह जीभ के जलने पर भी उसे हील करने में काफी काम आता है। साथ ही इसके कारण आपको दर्द व सूजन में काफी आराम मिलता है। इसके इस्तेमाल के लिए आप एलोवेरा के पत्ते को तोड़कर उसका फ्रेश जेल निकालें और उसे अपनी जीभ पर लगाएं। आप इस प्रक्रिया को दिन में कई बार दोहराएं। इसके अतिरिक्त आप एलोवेरा जेल को आईस ट्रे में रखकर फ्रीजर में रख दें और इस आईस क्यूब को कई बार अपनी जीभ पर रखें।

इस तरह घर पर बना सकते हैं रसीली और

क्रिस्पी जलेबी

जलेबी का नाम सुनते ही जी ललचा जाता है। आमतौर पर लोग इसे बाजार से लाकर खाते हैं लेकिन बाजार में यह आपको काफी महंगी मिलती है। ऐसे में आप इसे घर पर भी बेहद आसानी से बना सकते हैं। अमूमन लोगों की शिकायत होती है कि [illegible] जलेबी [illegible] नहीं बनती। तो दोस्तों, आज आप हमारा यह लेख पढ़िए। अगर आप हमारा लेख पढ़ने के बाद जलेबी बनाएंगे तो यकीन मानिए, आपके घरवाले आपसे बार-बार इसे बनाने की जिद करेंगे। तो चलिए जानते हैं इसे बनाने की विधि के बारे में-

सामग्री

- एक कटोरी मैदा
- चीनी
- चार बडे चम्मच बिना छिलके वाली सफेद उड़द दाल
- मक्खन या घी
- ईनो
- केसर
- खाने वाला कलर

विधि- सबसे पहले आप एक मिक्सी के जार में उड़द दाल डालकर एक महीन पाउडर तैयार कर लें। अब इस पाउडर को अच्छे से छान लें ताकि इसमें कोई मोटा दाना न रह जाएं। अगर इसमें मोटे दाने होंगे तो जलेबी बनाते समय यह बीच में अटकेंगे। अब बारी है घोल बनाने की। इसके लिए आप एक बाउल में एक कप मैदा, चार चम्मच उड़द दाल का पाउडर, डेढ़ चम्मच ईनो या मीठा सोडा, एक बड़ा चम्मच घी या मक्खन डालकर हाथों की सहायता से अच्छी तरह मिक्स करें।

अब एक पैन लें और उसमें आधा किलो चीनी, पानी, केसर और कलर डालकर उबालें। जब इसमें उबाल आ जाए तो आप चार-पांच मिनट के लिए मंदी आंच पर पकाएं। अब बारी आती है जलेबियां तलने की। इसके लिए आप एक पैन या कड़ाही में ऑयल डालकर गर्म करने के लिए रख दें। जब तक आपका ऑयल गर्म हो रहा है, तब तक आप जलेबियों के लिए घोल तैयार कर लें। घोल तैयार करने के लिए आप मिश्रण में थोड़ा पानी डालें। याद रखें कि आपका घोल थोड़ा गाढ़ा ही होना चाहिए। अगर आपका घोल पतला होगा तो आपकी जलेबियां सही तरह से नहीं बनेंगी। अब जब आपने घोल तैयार कर लिया है, तो आप इसे पाइपिंग बैग में डालें। अगर आपके पास पाइपिंग बैग नहीं है तो आप बाजार में मिलने वाले केचअप की बोतल, जलेबी मेकर या पॉलिथीन का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। अब आप इसमें अपना बैटर भरकर गोल-गोल जलेबियां बनाएं। याद रखें कि आपका तेल बहुत अधिक गर्म या ठंडा न हो। ज्यादा गर्म तेल से जलेबियां जल जाएंगी, वहीं अगर तेल मध्यम गर्म नहीं होगा तो जलेबियां नीचे बैठ जाएंगी। अब आप इन्हें चिमटे की सहायता से सेकें। जब यह सिक जाए तो आप इसे तुरंत निकालकर अपनी चाशनी में डालें। याद रखें कि आपको जलेबियां तुरंत ही सिरप में डालनी है, अन्यथा इसके अंदर चाशनी नहीं जाएगी। एक मिनट तक इसमें डुबोने के बाद आप सिरप से अपनी जलेबी को बाहर निकाल लें। आपकी स्वादिष्ट और क्रिस्पी जलेबी तैयार है। आप इसे गरमा-गरम सर्व करें क्योंकि गर्मागर्म जलेबी का स्वाद बेहद अलग ही होता है। लेकिन अगर आप चाहें तो इसे दो दिन तक भी आसानी से खा सकते हैं।

नोटः आपने मैदा का जो मिश्रण बनाया है, उसे आप किसी बोतल में भरकर फ्रिज़र में रखें। इसे आप एक महीने तक इस्तेमाल कर सकते हैं। इस प्रकार जब भी आपका जलेबी खाने का मन हो, बस मिश्रण निकालें और जलेबियां बनाएं।

घर पर इस तरह से आप बना सकते हैं ढाबा स्टाइल की दाल तड़का

यह तो हम सभी जानते हैं कि दाल पौष्टिक गुणों से युक्त होती है और इसमें मौजूद पोषक तत्वों के कारण ही इसे डाइट में शामिल करने की सलाह दी जाती है। लेकिन बहुत से घरों में दाल का नाम सुनते ही लोग नाक-मुंह सिकोड़ने लगते हैं और इसकी वजह होती है कि घर की दाल में आपको वह स्वाद नहीं मिलता, जो ढाबे की दाल में होता है। ऐसे में अगर आप चाहें तो घर पर भी बेहद आसानी से ढाबा स्टाइल तड़का दाल तैयार कर सकते हैं।

सामग्री-

- भिगी हुई दाल मिक्स चना, मूंग व उड़द
- नमक
- हल्दी
- हींग
- जीरा
- लाल मिर्च पाउडर
- हरी मिर्च लम्बी कटी हुई
- अदरक का टुकड़ा लम्बा कटा हुआ
- प्याज
- टमाटर
- हरा धनिया कटा हुआ
- कसूरी मेथी
- धनिया पाउडर
- गरम मसाला

तो चलिए जानते हैं कि घर पर कैसे बनाएं ढाबे जैसी तड़का दाल-

विधि- दाल तड़का बनाने के लिए आप सबसे पहले एक बाउल में थोड़ी-थोड़ी मूंग, चना व उड़द दाल डालकर करीबन आधे घंटे के लिए भिगो दें। इसके बाद आप कुकर लेकर उसमें भिगी हुई दाल डालें। अब इसमें नमक, हल्दी और पानी डालकर करीबन चार सीटी आने तक पका लें। इतने आपकी दाल पक रही है, तब तक आप दूसरी गैस पर तड़के की तैयारी करें। इसके लिए आप एक पैन लेकर उसमें थोड़ा ही डालें। अब इसमें जीरा, हींग डालें। जब यह तड़कने लगे तो इसमें लम्बी कटी हुई हरी मिर्च, अदरक डालें। इसके बाद इसमें लाल मिर्च पाउडर, प्याज, हरा धनिया डालकर चलाएं। अब इसमें हल्का सा नमक डालकर तीन-चार मिनट पकाएं। इसके बाद आप इसमें कटा हुआ टमाटर, कसूरी मेथी, धनिया पाउडर,, गरम मसाला डालकर अच्छी तरह मिलाएं और तीन-चार मिनट के लिए चलाएं। आपका मसाला तैयार हो गया है। अब आप इसमें उबली हुई दाल डालें और हल्का पानी डालकर अच्छी तरह चलाएं। इससे आपकी दाल की कंसीसटेंसी सही हो जाए।

अब आप अपनी दाल को एक सर्विंग बाउल में निकालें। इसके बाद आप इसके उपर तड़का डालें।

तड़का बनाने के लिए आप तड़का पैन लें और उसमें घी डालें। अब इसमें जीरा, हींग, एक हरी मिर्च, थोड़ी सी लाल मिर्च व हरा धनिया डालें। अगर आपको तीखा खाना कम पसंद है तो आप हरी मिर्च को स्किप भी कर सकते हैं। अब इस तड़के को आप अपनी दाल के उपर डालें और चम्मच की सहायता से चलाएं। आपकी दाल तड़का सर्व करने के लिए तैयार है। आप इसे रोटी या परांठें के साथ सर्व करें। यकीन मानिए, इसे देखते ही खाने वाले के मुंह में पानी आ जाएगा।

बैकयार्ड मुर्गीपालन योजना के तहत किसानों को वितरित किए गए रेनबो रोस्टर चूजे

अल्मोड़ा। विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की ओर से अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत किसानों को बैकयार्ड मुर्गीपालन के लिए रेनबो रोस्टर प्रजाति के चूजों का वितरण किया गया। कार्यक्रम संस्थान के निदेशक डॉ. लक्ष्मी कान्त के निर्देशन और कृषि विज्ञान केन्द्र काफलीगैर के नोडल अधिकारी डॉ. निर्मल कुमार हेडाऊ के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के तहत ग्राम उडेरखानी और लोब के 66 चयनित किसानों को आजीविका सुधार और पोषण में प्रोटीन की कमी दूर करने के उद्देश्य से 1600 रेनबो रोस्टर प्रजाति के चूजे वितरित किए गए। इसके साथ ही किसानों को मुर्गी आहार, पानी के बर्तन और दवाइयां भी उपलब्ध कराई गईं। अनुकरणीय परीक्षण के अंतर्गत ग्राम औखलीसिरोद, बिलौरी, करासीबुंगा, झिरौली, गाड़ीखेत, तुपेड़ और बनलेख के 33 किसानों को भी रेनबो रोस्टर चूजे, ब्रूडर दाना, बर्तन और दवाइयां दी गईं। अधिकारियों ने बताया कि रेनबो रोस्टर कम लागत, कम तकनीकी देखभाल और अंडा

व मांस दोनों उद्देश्यों के लिए उपयुक्त प्रजाति है, जो बैकयार्ड मुर्गीपालन के लिए लाभकारी मानी जाती है। यह कार्यक्रम आत्मा परियोजना बागेश्वर के वित्तीय सहयोग से संचालित किया गया। चूजों की उपलब्धता राजकीय कुक्कुट प्रक्षेत्र हवालबाग से सुनिश्चित की गई। कार्यक्रम के दौरान डॉ. एन.के. सिंह ने किसानों को बैकयार्ड मुग.ीपालन के प्रबंधन संबंधी प्रशिक्षण दिया। कृषि विज्ञान केन्द्र काफलीगैर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. राज कुमार ने दैनिक भोजन में अंडे के महत्व पर प्रकाश डालते हुए किसानों को इसे नियमित आहार में शामिल करने की सलाह दी। कार्यक्रम के संचालन में अनुसूचित जाति उपयोजना के नोडल अधिकारी एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. गौरव वर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस दौरान हरीश चन्द्र जोशी, डॉ. अमित कुमार, डॉ. राजेश कुमार मीणा, मनोज कुमार, महेश सिंह, सौरभ सिंह, बहादुर सिंह, सुरेश लाल और सुन्दर लाल सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

सोशल मीडिया में भ्रामक सूचना प्रसारित करने के आरोप में तीन के खिलाफ केस

रुद्रपुर। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शक्तिफार्म की एंबुलेंस सेवा को लेकर सोशल मीडिया पर भ्रामक पोस्ट प्रसारित करने के मामले में चिकित्साधिकारी डॉ. रोहन कुमार ने तीन लोगों के खिलाफ कोतवाली सितारगंज में तहरीर दी है। पुलिस ने आरोपियों पर मुकदमा दर्ज किया है। शुक्रवार को सीएचसी शक्तिफार्म के चिकित्साधिकारी और स्वास्थ्यकर्मी पुलिस चौकी पहुंचे। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ व्यक्तियों ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एंबुलेंस सेवा से जुड़ी एक कथित घटना के बारे में झूठी और तथ्यहीन जानकारी साझा की। आरोप है कि सुब्रतन कुमार, विक्की मंडल और अमित विश्वास ने अपनी फेसबुक आईडी से पोस्ट कर दावा किया कि डीजल खत्म होने के कारण एंबुलेंस रास्ते में खड़ी रही, जिससे मरीज की मौत हो गई। डॉ. रोहन कुमार ने कहा कि यह सूचना पूरी तरह निराधार है। उनके अनुसार सड़क हादसे में घायल युवक को अस्पताल मृत अवस्था में लाया गया था और एंबुलेंस में ईंधन खत्म होने जैसी कोई घटना नहीं हुई। कहा कि झूठी खबर फैलाकर स्वास्थ्य विभाग की छवि धूमिल करने का प्रयास किया गया है। उनके साथ डॉ. दर्शन सिंह, डॉ. ख्याली सिंह, मीनाक्षी राय, जीत सिंह, रूपा डे, सीमा मंडल, दुर्गा, अजीत हाल्दार, हरेन मंडल, दीपा मंडल और प्रियंका समेत कई स्वास्थ्यकर्मी मौजूद रहे। बाद में चिकित्साधिकारी ने कोतवाल सुंदरम शर्मा को तहरीर सौंपी। कोतवाल ने बताया कि तीनों आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है.क्या है मामला: 18 मई की रात शक्तिफार्म क्षेत्र में सड़क हादसे में 24 वर्षीय मंजीत सिंह उर्फ बिट्टू निवासी गुरुनानकनगरी की मौत हो गई थी। इसके बाद सोशल मीडिया पर समय पर एंबुलेंस नहीं मिलने और अस्पताल की बदहाली को लेकर पोस्ट वायरल हुई थीं। मामले की जांच एक टीम कर रही है। वहीं 108 सेवा के जिला समन्वयक नवनीत कुमार ने बताया कि शक्तिफार्म की एंबुलेंस 15 मई से खराब होकर वर्कशॉप में है तथा डीजल खत्म होने की बात पूरी तरह गलत है।

भ्रामक सूचना फैलाकर विभाग को बदनाम करना अपराधिक कृत्य है। बिना तथ्यों की पुष्टि के इस तरह की सूचना पोस्ट करने वालों पर भविष्य में सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। -डॉ. केके अग्रवाल, सीएमओ ऊधमसिंह नगर

रूस के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में एमआ. ईईटी ने बढ़ाया भारत का गौरव

हल्द्वानी। उत्तराखंड के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान एमआईईटी कुमाऊं ने रूस में आयोजित अंतरराष्ट्रीय यूरेशियन नेटवर्क ऑफ यूनिवर्सिटीज सम्मेलन में भाग लेकर भारत और कुमाऊं क्षेत्र का गौरव बढ़ाया है। यह सम्मेलन रूस की अस्त्राखान तातीश्चेव स्टेट यूनिवर्सिटी में आयोजित किया गया, जिसमें दुनिया के 17 देशों के विश्वविद्यालयों, शिक्षा विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं ने हिस्सा लिया।सम्मेलन में एमआईईटी के वाइस चेयरमैन पुनीत अग्रवाल और प्लेसमेंट निदेशक आकांक्षा अग्रवाल की उपस्थिति को विशेष महत्व दिया गया। भारत की ओर से उनकी भागीदारी को काफी सराहा गया। कार्यक्रम के दौरान वैश्विक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, संयुक्त शोध परियोजनाओं और छात्र विनिमय कार्यक्रमों को लेकर विस्तार से चर्चा की गई।

पुनीत अग्रवाल ने कहा कि शिक्षा को वैश्विक स्तर पर जोड़ना बेहद जरूरी हो गया है। उन्होंने विभिन्न देशों के बीच छात्र विनिमय कार्यक्रम, नई तकनीकों के आदान-प्रदान और संयुक्त शोध को बढ़ावा देने पर जोर दिया। सम्मेलन को संबोधित करते हुए इगोर अलेक्सेयेव ने बताया कि इस कार्यक्रम में भारत, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिस्तान, कजाकिस्तान, ईरान और बेलारूस समेत 17 देशों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक बनाने, तकनीकी सहयोग बढ़ाने और विद्यार्थियों के लिए अंतरराष्ट्रीय अवसर तैयार करने जैसे विषयों पर मंथन किया गया।

हरित हरिद्वार अभियान : कुम्भ-2027 के लिए हरिद्वार को स्वच्छ, सुंदर और हरित बनाने की पहल

हरिद्वार। कुंभ मेला-2027 के लिए हरिद्वार को सजाने और संवारने तथा हरा-भरा बनाने के उद्देश्य से मेला प्रशासन द्वारा हरिद्वार-रूड़की विकास प्राधिकरण के सहयोग से आमजन की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए "हरित हरिद्वार अभियान" संचालित किया जाएगा। अभियान के अंतर्गत आगामी मानसून सत्र के दौरान कुंभ क्षेत्र में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कराया जाएगा।मेला अधिकारी एवं हरिद्वार रुड़की विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष श्रीमती सोनिका की पहल पर संचालित होने वाले इस अभियान के लिए समग्र नोडल अधिकारी मुख्य विकास अधिकारी हरिद्वार डॉ. ललित नारायण मिश्रा को नामित किया गया है। श्री मिश्रा ने अभियान की जानकारी देते हुए बताया कि "हरित हरिद्वार अभियान" के अंतर्गत जनसहभागिता के माध्यम से व्यापक स्तर पर पौधारोपण कराया जाएगा तथा लगाए गए पौधों के संरक्षण एवं देखभाल पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि अभियान का उद्देश्य केवल वृक्षारोपण तक सीमित नहीं

है, बल्कि हरिद्वार में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना और स्थायी हरित वातावरण विकसित करना भी है।उन्होंने बताया कि इच्छुक व्यक्ति, संस्थाएं एवं सामाजिक संगठन ऐसे स्थानों का चयन कर सकते हैं जहां वे पौधारोपण कराना चाहते हैं। चयनित स्थलों की सूचना प्राधिकरण को उपलब्ध कराने पर समन्वय स्थापित कर पौधारोपण एवं संरक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने कहा कि कुम्भ मेला-2027 केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और जनजागरूकता का भी एक बड़ा अवसर है।

साप्ताहिक परेड में रिक्रूटों को अनुशासन का पाठ पढ़ाया

नई टिहरी। चंबा पुलिस लाइन में साप्ताहिक परेड अनुशासन, ऊर्जा और उत्साह के साथ आयोजित की गई। एसएसपी श्वेता चौबे ने परेड का नेतृत्व किया। परेड में पुलिस अधिकारी, जवान और प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे रिक्रूट आरक्षियों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। एसएसपी ने रिक्रूटों के साथ खुद दौड़ लगाकर उनकी फिटनेस का परीक्षण किया। पुलिस लाइन में आयोजित परेड में एसएसपी ने परेड की सलामी ली। उसके बाद रिक्रूट आरक्षियों के साथ मैदान में दौड़ लगाकर उन्हें फिटनेस और अनुशासन का पाठ पढ़ाया। साप्ताहिक परेड में ड्रिल अभ्यास, शस्त्र संचालन, सामरिक प्रशिक्षण और शारीरिक दक्षता आदि गतिविधियां आयोजित की गई। शस्त्र अभ्यास के दौरान पुलिस बल की फुर्ती, तत्परता और अनुशासन विशेष रूप से देखने योग्य रहा। एसएसपी ने सभी पुलिस कर्मियों को शारीरिक रूप से फिट रहने, मानसिक रूप से सजग रहने और प्रत्येक परिस्थिति में तत्परता एवं अनुशासन के साथ कार्य करने को प्रेरित किया। उसके बाद उन्होंने चंबा पुलिस लाइन में व्यायामशाला, परिवहन शाखा, भोजनालय और प्रशिक्षण व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। एसएसपी ने भोजन की गुणवत्ता बेहतर बनाए रखने, साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने, वाहनों की फिटनेस सुनिश्चित करने और व्यायामशाला में और उपकरण उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे रिक्रूट आरक्षियों के प्रशिक्षण की समीक्षा करते हुए आउटडोर और इंडोर क्लासेस को और अधिक प्रभावी, व्यवहारिक एवं परिणामोन्मुख बनाने के दिशा-निर्देश दिए।

झमाझम बारिश से सुहावना हुआ बदरीनाथ का मौसम

चमोली(। पिछले कुछ दिनों से भीषण गर्मी पड़ रही है। शुक्रवार को दोपहर बाद बदरीनाथ धाम में झमाझम बारिश होने से वहां का मौसम सुहावना बना हुआ है जबकि गोपेश्वर व आसपास के इलाकों में तेज हवा के साथ बूंदाबांदी होने से लोगों को गर्मी से राहत मिली। बदरीनाथ धाम की ऊंची चोटियों पर हल्की बर्फबारी हुई। शुक्रवार दोपहर बाद अचानक मौसम ने करवट बदली और बदरीनाथ धाम में झमाझम बारिश शुरू हो गई। लोग छाते व रेनकोट में दर्शनों के लिए लाइन में लगे रहे। वहीं बदरीनाथ धाम की ऊंची चोटियों में हल्की बर्फबारी भी हुई है। इससे धाम में ठंडक महसूस हो रही है। धाम में पहुंचे हजारों श्रद्धालु इस मौसम में आनंदित नजर आए। वहीं शाम करीब चार बजे गोपेश्वर व आसपास के क्षेत्रों में भी मौसम बदला और तेज हवा के साथ बूंदाबांदी हुई।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आर्फसेट प्रिंटर्स 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 98, 2-फ्लोर, सनशाइन अपार्टमेन्ट, नागल हटनाला, कुल्हान, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून - 248001 से प्रकाशित।

सम्पादकः
गार्गी मिश्रा
8765441328

समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।